पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल का अभिनन्दन समारोह 16 जनवरी, 2005 को

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के यशस्वी प्राचार्य, जैनपथप्रदर्शक पाक्षिक-पत्र के सम्पादक, विख्यात प्रवचनकार, विशिष्ट मनीषा के धनी पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल का जैनतत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय महत्त्व को रेखांकित करने हेतु उनका अभिनन्दन समारोह रविवार, दिनांक 16 जनवरी, 2005 को जयपुर में आयोजित किया जा रहा है।

इस अवसर पर उनके महत्त्वपूर्ण अवदान को उल्लेखित करते हुये उन्हें एक अभिनन्दन ग्रंथ भी समर्पित किया जाना है। साथ ही श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के छात्रों का परिचय सम्मेलन भी आयोजित किया जा रहा है।

हमारा आपसे आग्रहपूर्ण निवेदन है कि उक्त कार्यक्रम में अवश्य पधारें। आपकी सपरिवार उपस्थिति से उक्त समारोह की शोभा वृद्धिंगत होगी। कृपया अपने आने की पूर्व सूचना अवश्य भेजें; ताकि आपके लिये समुचित व्यवस्था की जा सके।

सम्पर्क-सूत्र : अखिल बंसल, 129, जादोननगर बी, स्टेशन रोड, दुर्गापुरा, जयपुर-18

कार्यक्रम

रविवार, दिनांक 16 जनवरी, 05

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के छात्रों का परिचय सम्मेलन

(स्थान : श्री टोडरमल स्मारक भवन)

प्रात: 8.30 से 9.15 — प्रवचन (डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल)

9.30 से 11.30 — विद्वत् संगोष्ठी
विषय : बीसवीं सदी की विद्वत् परम्परा में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महा-विद्यालय का योगदान

दोप. 3.00 से 4.30 — गोष्ठी
विषय : मेरी दृष्टि में बड़े दादा

पण्डितश्री रतनचन्दजी भारिल्ल का अभिनन्दन समारोह एवं अभिनन्दन ग्रन्थ 'रतनदीप' का लोकार्पण समारोह

समय : रात्रि 6.30 बजे से

स्थान : **विद्याश्रम स्कूल का सभा भवन, दैनिक भास्कर के सामने जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर (राज.)**

साधना चैनल पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन
प्रतिदिन प्रात: 6:45 बजे अवश्य सुनें।
साधना चैनल आपके यहाँ न आता हो तो श्री पंकज जैन (साधना चैनल) से 09312506419 नम्बर पर सम्पर्क करें।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 22 | 258 | अंक : 6

प्रवचनसार पद्यानुवाद

ज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापन महाधिकार

गुण-चित्रमयपर्याय से उत्पादव्ययध्रुवभाव से।
जो द्रव्य का अस्तित्व है वह एकमात्र स्वभाव है।।९६।।
रे सर्वगत सत् एक लक्षण विविध द्रव्यों का कहा।
जिनधर्म का उपदेश देते हुए जिनवरदेव ने।।९७।।
स्वभाव से ही सिद्ध सत् जिन कहा आगमसिद्ध है।
यह नहीं माने जीव जो वे परसमय पहिचानिये।।९८।।
स्वभाव में थित द्रव्य सत् सत् द्रव्य का परिणाम जो।
उत्पादव्ययध्रुवसहित है वह ही पदार्थस्वभाव है।।९९।।
भंगबिन उत्पाद ना उत्पाद बिन ना भंग हो।
उत्पादव्यय हो नहीं सकते एक ध्रौव्यपदार्थ बिन।।१००।।
पर्याय में उत्पादव्ययध्रुव द्रव्य में पर्यायें हैं।
बस इसलिए तो कहा है कि वे सभी इक द्रव्य हैं।।१०१।।
उत्पादव्ययथिति द्रव्य में समवेत हों प्रत्येक पल।
बस इसलिए तो कहा है इन तीनमय हैं द्रव्य सब।।१०२।।
उत्पन्न होती अन्य एवं नष्ट होती अन्य ही।
पर्याय किन्तु द्रव्य ना उत्पन्न हो ना नष्ट हो।।१०३।।

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

कौन बंधता है और कौन नहीं ?

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दि के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 26 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

बध्यते मुच्यते जीवः सममो निर्ममो क्रमात्।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन निर्ममत्वं विचिन्तयेत्।।26।।

ममतासहित जीव और ममतारहित जीव अनुक्रम से बंधता है और मुक्त होता है; इसलिए सम्पूर्ण प्रयत्न से निर्ममत्व का विशेषरूप से चिन्तन करना चाहिए।

(गतांक से आगे .....)

भगवान आत्मा की पूर्णानन्द निधि में अन्तरएकता द्वारा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र, शुक्लध्यान और केवलज्ञान एकधारा से प्रगट होते है। तीन लोक और तीन काल में इन्हें प्रगट करने का दूसरा मार्ग नहीं है। इन्हें वीतरागता के मार्ग से ही प्रगट किया जा सकता है, राग के मार्ग से वीतरागता प्रगट नहीं होती।

देवलोक के स्वामी शक्रेन्द्र और ईशानेन्द्र जैसे महापुण्यवान जीव भी भगवान के चरणों में इस वीतरागता की बात समझने आते हैं और इस वीतराग मार्ग की चर्चा सुनकर कहते हैं कि 'हे नाथ ! आपका मार्ग ही सच्चा मार्ग है।'

अहा ! सर्वज्ञ वीतरागी परमात्मा की वाणी में मोक्ष का रहस्य आया है, उसे यहाँ संक्षेप में बता दिया कि आत्मा को मोक्ष अंतर एकता से ही प्राप्त होता है। राग से पृथकता और स्वभाव से एकता करना ही मोक्षमार्ग है। समयसार में भी एकत्व-विभक्त आत्मा की ही बात कही है।

अनन्त जीव सिद्धदशारूप से वर्तमान में विराजमान हैं और अनन्त जीव भविष्य में परमात्मा होंगे। उन सभी ने एक ही रहस्य की बात बताई है कि भाई ! तू राग की उपेक्षा और स्वभाव की अपेक्षा करके उसी में स्थित हो जा, बस ! अन्य

कोई मुक्ति का उपाय नहीं है।

यहाँ ज्ञानार्णव ग्रंथ का आधार लेकर कहते हैं कि रागी जीव कर्मों से बंधता है और विरागी जीव कर्मों से मुक्त होता है। यहाँ रागी का अर्थ राग के साथ एकता माननेवाला जीव है। सम्यग्दृष्टि को भी राग तो है; किन्तु राग के साथ एकता नहीं है, इसलिए वह कर्मों से नहीं बंधता है। सम्यग्दृष्टि को पाँच इन्द्रियों के भोगादि सम्बन्धी राग होता है, लेकिन उसमें एकता नहीं होती। जो एक बार राग से भिन्न हुआ, वह पुन: एक नहीं होता, भिन्न ही रहता है।

बंध-मोक्ष सम्बन्धी जिनेन्द्रदेव का संक्षेप में यही उपदेश है कि वीतरागी जीव कर्मों से मुक्त होते हैं और रागी जीव कर्मों से बंधते हैं। वीतराग प्रभु वर्तमान में विराजमान हो अथवा न हो, उनकी वाणी प्राप्त हो अथवा न हो; लेकिन भगवान का उपदेश एकमात्र यही है।

श्री पूज्यपादस्वामीकृत इष्टोपदेश की 26वीं गाथा चल रही है।

रागी जीव कर्मों से बंधता है। जो जीव अपने शुद्ध आनन्दकन्द स्वरूप के साथ विकल्प का सम्बन्ध करता है, वही रागी जीव कर्मों से बंधता है और विरागी जीव अपने स्वरूप के साथ सम्बन्ध जोड़कर विकल्प से सम्बन्ध तोड़ता है; इसलिए वह कर्मों से मुक्त हो जाता है।

आत्मा सच्चिदानन्द, ज्ञानानन्द, शुद्ध परमानन्द मूर्ति है। वह एक सूक्ष्म विकल्प के साथ भी सम्बन्ध रखे तो स्वयं बंधता है। किसी भी जाति के परद्रव्य अथवा परभाव के साथ सम्बन्ध बाँधते ही जीव बंधता है और चैतन्य ज्ञानानन्द ज्योति का विकल्पादि के साथ सम्बन्ध तोड़ते हुए अपनी दशा में अपने असंग तत्त्व को प्राप्त करे तो बन्धन छूट जाता है। यही बन्ध-मोक्ष सम्बन्धी जिनेन्द्रदेव का उपदेश है ह्न ऐसा पूज्यपादस्वामी कहते हैं।

अब कहते हैं कि जिसने बन्ध-मोक्ष की यह स्थिति समझी है, वह व्रतादि में चित्त लगाते हुए मन-वचन-काय की सावधानीपूर्वक निर्मम होने का प्रयत्न करें और निर्ममभाव को प्राप्त करें।

प्रश्न : निर्ममता का प्रयत्न किस रीति से करना चाहिए ?

उत्तर : स्वभाव की ओर प्रयत्न करो ! चैतन्यघन, आनन्दकन्द ज्ञानमूर्ति स्वभाव में एकाग्र होने का प्रयत्न करो तो निर्ममभाव उत्पन्न होगा। यहाँ मन-वचन-काय से हटकर अंदर स्वरूप में सावधानीरूप निश्चय उपाय के साथ व्रतादि के विकल्पवाले शुभ व्यवहाररूप उपाय की बात की है।

आत्मा शुद्ध चैतन्यमूर्ति, आनन्द का कन्द स्वयं ही परमात्मा है। आत्मा एक वस्तु है, पदार्थ है। त्रिकाल आत्मवस्तु में त्रिकाल ज्ञान, दर्शन, स्वच्छता, प्रभुता, आनन्द, शान्ति आदि अनन्त गुणों से जड़ा हुआ अविनाभाव स्वभाव है। जड़ा होने का अर्थ यहाँ कील के माध्यम से जड़ा होना नहीं है; अपितु जिसप्रकार गुड़ में मीठापना मिला है; उसीप्रकार आत्मा में ज्ञानादि शक्तियाँ जड़ी हुई है। यही इष्ट है तथा यही आत्मा का सच्चा स्वरूप है। आत्मा में रागादि विकल्पों का त्रिकाल अभाव है; फिर भी विकल्प के साथ एकत्व करे, सम्बन्ध करें तो बंधता है। इसप्रकार संसार में परिभ्रमण के कारण बंध को इस जीव ने स्वयं ही खड़ा किया है।

जो जीव अन्तर की सावधानीपूर्वक निज शुद्धस्वभाव से एकत्व करता है और राग से सम्बन्ध तोड़ता है, वही जीव मुक्ति को प्राप्त होता है अर्थात् बन्ध के अभावपूर्वक आत्मा की निर्विकल्प शान्ति की पूर्णतारूप मुक्ति को प्राप्त करता है।

परमार्थ से शरीर, कर्म, शुभाशुभरागादिभाव, विकल्पादि से मैं (आत्मा) भिन्न हूँ और मेरे शुद्ध ज्ञानानन्द ज्योतिस्वरूप से वे जुदे हैं। उनके स्वरूप से मैं जुदा हूँ और मेरे स्वरूप से वे जुदे हैं। इसप्रकार अन्तर में भेद का अभ्यास करना ही मोक्षार्थी जीव का कर्तव्य है।

परस्वरूप से अपने को जुदा करने का अभ्यास ही आत्मा के अतीन्द्रिय आनन्द की पूर्णतारूप मुक्ति को प्राप्त करने की प्रक्रिया है। शरीरादि की विविध अवस्थाओं में अथवा रागादि विकल्पों में मेरा कुछ भी नहीं है और मेरे स्वरूप से उनका कुछ लेना-देना नहीं है।

अरे भाई ! यहाँ शरीर और विकल्प से भी जुदा होने के अभ्यास की बात करते हैं तो स्त्री, कुटुम्ब आदि की बात तो बहुत दूर ही रह गई, उनमें तो तेरा कुछ है ही नहीं। **(क्रमश:)**

परमात्मा कौन है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की सातवीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्म-रसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

णिस्सेसदोसरहिओ केवलणाणाइपरमविभवजुदो।
सो परमप्पा उच्चइ तव्विवरीओ ण परमप्पा ॥7॥

नि:शेष दोष से जो रहित है और केवलज्ञानादि परम वैभव से जो संयुक्त है, वह परमात्मा कहलाता है; उससे विपरीत परमात्मा नहीं है।

पूर्व कथित अठारह दोषों तथा मोहजनित समस्त दोषों से रहित भगवान होते हैं। उन्हें सर्वज्ञत्व और पूर्णानन्द प्रकट हो गया है, इस अपेक्षा से ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने सर्व दोषों का नाश किया है। यद्यपि योग के कम्पनादि विकार अभी मौजूद हैं, किन्तु उनको यहाँ नहीं गिना है, गौण किया है; क्योंकि यह अरहन्तदशा का वर्णन है।

परमात्मा समस्त दोष रहित और केवलज्ञानादि गुणों सहित होते हैं। जो इससे विपरीत हों, वे परमात्मा नहीं हैं। इसप्रकार अस्ति-नास्ति से कथन किया। इस गाथा में तीर्थंकर परमदेव के स्वरूप का कथन है। यहाँ सिद्धदशा को प्राप्त परमात्मा की बात न होकर अरहन्तदशा में विराजमान तीर्थंकर भगवान की बात है।

चार घातिया कर्म ह्न ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय और अन्तराय आत्मगुणों के घातक हैंह्न यह कथन निमित्त की अपेक्षा है। एक तत्त्व का दूसरे तत्त्व में अत्यन्त अभाव है तो कौन किसका घात करे ? साथ ही **गुण का घात** ऐसा कहा ह्न किन्तु गुण का घात तो कभी होता नहीं; घात तो गुण की पर्याय का होता है। घात होने की योग्यता भी पर्याय में स्वयं अपने से ही है। जब उस पर्याय का घात होता है, तब निमित्तरूप से घातिया कर्मों को घात करनेवाला कहा जाता है।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय और अन्तराय – ये चार प्रकार के घातिया कर्म हैं, इन चारों का सम्पूर्ण नाश भगवान ने किया है। भगवान के केवलज्ञान प्रकट होने पर घातिया कर्मों का एक अंश भी शेष नहीं रहता; इसलिये निमित्त की अपेक्षा कहा जाता है कि भगवान ने घातिया कर्मों का नाश किया। कर्म आत्मा के गुणों का घात करते हैं या आत्मा कर्मों का नाश करता है – ये दोनों ही कथन निमित्त की मुख्यता से हैं। निश्चय से तो कोई किसी का कर्त्ता-हर्त्ता नहीं है। जब आत्मा की स्वयं की योग्यता से अपनी पर्याय में ज्ञानादि का विकास रुक जाता है, तब निमित्तरूप से कर्म को घात करनेवाला कहा जाता है और जब आत्मा को केवलज्ञान प्रकट होता है, तब आत्मा ने कर्मों का नाश किया – ऐसा कहा जाता है। वास्तव में तो कर्म स्वयं अपनी योग्यता से टले हैं।

इसप्रकार घातिया कर्मों का नाश कर देने से भगवान समस्त दोषों से रहित हैं अथवा पूर्वकथित अठारह महादोषों से रहित होने के कारण भगवान समस्त दोषों से रहित हैं तथा वे केवलज्ञानादि गुणों से समृद्ध हैं। ऐसा केवलज्ञान आत्मा की शक्ति में से प्रकट हुआ है, यह शक्ति प्रत्येक आत्मा में विद्यमान है। जिसने ऐसी शक्ति की प्रतीति की, वास्तव में उसी ने केवली को माना है।

भगवान को केवलज्ञान आत्मा की शक्ति से ही प्रकट हुआ है। उस शक्ति की प्रतीति के बिना वास्तव में केवलज्ञान की उत्पत्ति नहीं होती। भगवान का केवलज्ञान उनकी शक्ति में से प्रकट हुआ है, उसीप्रकार मेरा केवलज्ञान भी किसी निमित्त में से या राग में से प्रकट होनेवाला नहीं है, वह भी अपनी शक्ति में एकाग्र होने पर ही प्रकट होगा। ऐसी शक्ति की प्रतीति करने पर सम्यग्दर्शन-ज्ञान होकर केवलज्ञान होता है। इसप्रकार यहाँ अकेले केवली की बात नहीं है, अपितु जैसी केवली की शक्ति है, वैसी ही शक्ति मेरी भी है ह्न ऐसी प्रतीति सहित की बात है।

देखो ! जीवों को पूर्व भव के कितने संस्कार छूट जाते हैं; परन्तु यदि वे चैतन्य के लक्ष्य पूर्वक नित्य के आश्रय से ज्ञान प्रकट करे तो उस ज्ञान के संस्कार आत्मा के साथ नित्य रहें। आत्मा त्रिकाली है, उसके आश्रय से ही भगवान को पूर्ण विमल केवलज्ञान और केवलदर्शन प्रकट हुआ है। तदुपरान्त भगवान को परम वीतरागी अनंत आनंद प्रकट हुआ है ह्न ऐसा भगवान का वैभव है। पैसा या मकान आत्मा का

वैभव नहीं है। आत्मा का वैभव तो केवलज्ञान-दर्शन और परमवीतरागस्वरूप आनंद ही है। ऐसे वैभव से अरहंत भगवान समृद्ध हैं और वे ही सच्चे देव हैं। भगवान का आनंद वीतरागी है, वे लोकालोक का नाटक देखते हैं, इसलिये उनको आनंद नहीं होता है। संसारी जीव तो राग से आनंद मानते हैं, किन्तु वह वास्तविक आनंद नहीं है। भगवान का आनंद तो परमवीतरागी है।

'त्रिकाल निरावरण, नित्यानन्द-एकस्वरूप निज कारणपरमात्मा की भावना से उत्पन्न कार्यपरमात्मा ही भगवान अरहंत परमेश्वर है।'

अहो ! यहाँ तो कार्यपरमात्मा के साथ कारणपरमात्मा को भी सम्मिलित कर लिया है। यहाँ आचार्यदेव ने ध्रुव और वर्तमान ह्न इन दोनों की संधि रखी है। ध्रुव कारण है और वर्तमान कार्य हैह्न ऐसे कारण-कार्य को साथ-साथ ही रखा है। ध्रुव-अचल-ज्ञायक एकरूप नित्यस्वभाव ही कारणपरमात्मा है, उसमें श्रद्धा-ज्ञान-एकाग्रता करने का नाम कारणपरमात्मा की भावना है। इस भावना से ही भगवान कार्य परमात्मा हुये हैं। कारणपरमात्मा त्रिकाल है और उसके आश्रय से कार्यपरमात्मारूप नई दशा प्रकट होती है।

संसार या मोक्ष दोनों ही एकसमय की पर्याय है, उस एकसमयवर्ती पर्याय जितनी ही समूची वस्तु नहीं है, वस्तु तो त्रिकाल आनंदरूप-एकरूप-ध्रुव है। वह ध्रुव वस्तु द्रव्यदृष्टि का विषय है और वही कारणपरमात्मा है तथा उसकी भावना से कार्य परमात्मा होते हैं। पूर्णानन्द भगवान कहाँ से प्रकट हुआ ? वह पहले तो प्रकट था नहीं और राग में से आनंद आता नहीं; क्योंकि उसका तो अभाव हो जाता है; अत: जो त्रिकाल आनंदस्वरूप कारणपरमात्मा है, जो त्रिकाल आनंदशक्ति से भरपूर है, उसी की श्रद्धा-ज्ञान और एकाग्रतारूप भावना से वह आनंद पर्याय में पूर्ण व्यक्त हुआ है, उसी की कार्यपरमात्मा संज्ञा है ह्न ऐसे कार्य परमात्मा ही अरहंत परमेश्वर हैं।

नित्यानंद-एकस्वरूप = नित्यानंद ही जिसका एक स्वरूप है, वह कारणपरमात्मा तीनों काल आवरण रहित है। प्रत्येक आत्मा शक्ति की अपेक्षा निरावरण और आनंदमय ही है, इसलिये प्रत्येक आत्मा कारणपरमात्मा है। जो ऐसे कारणपरमात्मा की भावना करता है, उसी का आश्रय करता है, वह व्यक्तिअपेक्षा से भी निरावरण

और आनंदमय हो जाता है अर्थात् कार्यपरमात्मा हो जाता है। शक्ति में से ही व्यक्ति होती है, इसलिये शक्ति कारण है और व्यक्ति कार्य है। इसीलिये शक्तिरूप परमात्मा को कारणपरमात्मा और व्यक्त परमात्मा को कार्यपरमात्मा कहा जाता है।

कारणपरमात्मा अर्थात् कौन ? सभी आत्माओं का एक अधिष्ठानरूप कोई कारणपरमात्मा नहीं है, परन्तु प्रत्येक आत्मा स्वयं स्वतंत्र त्रिकाल कारणपरमात्मा है। प्रत्येक आत्मा की ध्रुव त्रिकालशक्ति ही निज कारणपरमात्मा है और उसी के आश्रय से कार्यपरमात्मदशा प्रकट होती है।

टीकाकार की ऐसी शैली है कि वे कार्य के साथ कारण भी बताते हैं। अरहंत कार्यपरमात्मा हैं, उनके साथ यहाँ कारणपरमात्मा का भी वर्णन किया। पहले कार्यनियम के साथ कारणनियम त्रिकाल एकरूप बताया था। यहाँ कार्यपरमात्मा का वर्णन है तो उसके समक्ष त्रिकाली कारणपरमात्मा का स्वरूप भी बताया।

कारणपरमात्मा अर्थात् शक्ति और कार्यपरमात्मा अर्थात् व्यक्ति। शक्ति में से ही व्यक्ति होती है। शक्ति कारणपरमात्मा है और उसमें से व्यक्ति होना वह कार्य परमात्मा है। शक्तिरूप से सभी आत्माओं में जो त्रिकाल परमात्मपना है, वही कारणपरमात्मा है; उसी में से कार्य परमात्मदशा प्रकट होती है। किसी पुण्य-विकल्प अथवा निमित्त में से वह कार्यपरमात्मदशा नहीं आती, व्यवहाररत्नत्रय भी उसका कारण नहीं और निश्चयरत्नत्रय की पर्याय में से भी परमात्मदशा नहीं होती; अत: निश्चयरत्नत्रय की पर्याय भी परमार्थ से कारण नहीं है।

जो कार्य प्रकट हुआ उसके साथ कारणपरमात्मपना भी सदा विद्यमान ही है। यदि निश्चयरत्नत्रय पर्याय में से वह कार्य प्रकट हुआ हो तो उस पर्याय का व्यय अर्थात् अभाव होने पर कार्य भी नहीं रह सकता। कार्यपरमात्मदशा नवीन प्रकट हुई है, वह सादि-अनंत रहा करती है और उसके साथ प्रतिसमय उसका कारण भी रहा करता है। परमात्मदशारूप कार्य प्रतिसमय चालू रहता है, तो उसके साथ ही उसका कारण भी चालू ही रहता है। अत: निश्चय से कारणपरमात्मा ही कार्यपरमात्मा का कारण है। प्रतिसमय यदि कारण न वर्त रहा हो तो परमात्मदशा रूपी कार्य भी नहीं टिक सकता। कारण और कार्य ह्न दोनों को साथ रखकर अपूर्वबात की है। **(क्रमश:)**

शक्तियों का संग्रहालय : भगवान आत्मा

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम समयसार नामक ग्रन्थाधिराज पर परमपूज्य आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने 'आत्मख्याति' नामक संस्कृत टीका लिखी है। उसके अन्त में परिशिष्ट के रूप में अनेकान्त का विस्तृत वर्णन करते हुये आत्मा की 47 शक्तियों का वर्णन किया है, साथ ही अनेक कलश भी लिखे हैं। उन पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने समय-समय पर अतिमहत्त्वपूर्ण प्रवचन किये हैं, जो पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रस्तुत हैं।

(गतांक से आगे .....)

आत्मा निश्चयनय से चिदानन्द प्रभु है। धर्मी को उसकी निर्मल प्रतीति एवं अनुभव होता है। उसे पर्याय में आंशिक विकार और आंशिक अतीन्द्रिय आनंद दोनों का वेदन होता है। धर्मी अपने को किसी अवस्था में शुद्ध एकाकार अनुभव करता है और जब उपयोग को अपने अन्तर में लगाता है तो किसी अवस्था में शुद्धाशुद्ध का भी अनुभव करता है, इसमें कोई विरोध नहीं है। दोनों दशाओं को ज्ञानी एकसाथ जानता है। उसको शुद्धता के साथ किंचित् राग का वेदन भी होता है, इसतरह दोनों विरुद्धभाव भी साथ में रह सकते हैं।

देखो ! तीर्थंकरों को जन्म से क्षायिक सम्यक्त्व होता है। आठ वर्ष की उम्र में स्वभाव के विशेष अवलम्बनपूर्वक अतीन्द्रिय आनंद का भोग करते हैं। उनमें अनेक तीर्थंकर चक्रवर्ती भी होते हैं। उनके तो 96 हजार रानियाँ और उन संबंधी भोगोपभोग भी होता है। यद्यपि उन भोगों में उनको सुख बुद्धि नहीं होती; तथापि भोगों का परिणाम तो होता ही है। इस परिणाम को वे दुखरूप ही जानते हैं तथा जितनी शुद्धता प्रकट है, उतनी शान्ति का वेदन करते हैं, उसे सुखरूप जानते हैं। दुखरूप एवं सुखरूप दोनों स्थितियों को वे एकसाथ जानते हैं। छठवें गुणस्थान में मुनिवरों को जो शुभभाव होता है, वे उसे दुखरूप जानते हैं तथा आत्मा के आश्रय से जितनी निर्मलता प्रकट हुई है, उतनी शांति का वेदन करते हैं। ये दोनों धाराऐं

उनके एकसाथ ही चलती है ह्न साधकदशा ऐसी ही होती है।

इसप्रकार मिथ्यादृष्टि को एकान्त अशुद्धता-दुःख का वेदन होता है, भगवान केवली को एकान्त शुद्धता-आनंद का वेदन होता है और साधक अवस्था में आंशिक आनंद एवं आंशिक दुख दोनों का वेदन होता है।

अहाहा ! आत्मा की विचित्रता तो देखो ! आत्मा में अनेक प्रकार की योग्यतायें हैं। तदनुसार जिनवाणी में नाना अपेक्षा से कथन किये गये हैं, उन्हें यथार्थ समझना चाहिये। अज्ञानी को इन बातों से भ्रम होता है; किन्तु ज्ञानी स्याद्वाद के बल से भ्रमित नहीं होता। वह तो वस्तु को जैसी है, वैसी ही मानता है।

देखो ! जिसके उदर में तद्भव मोक्षगामी पुत्र थे ह्न ऐसी सीताजी को सारथी ने रामचन्द्रजी के आदेश से ऐसे भयानक-घोर जंगल में छोड़ दिया, जहाँ सिंह-बाघ जैसे हिंसक प्राणियों का निर्बाध संचार था। उससमय रामचन्द्रजी के कैसे परिणाम रहे होंगे ? रामचन्द्रजी का आदेश सुनकर सारथी भी स्तब्ध रह गया। जब छाती पर पत्थर रखकर सारथी ने सीताजी को जंगल में अकेला छोड़ा और रामचन्द्र के आदेश का उल्लेख किया तो सीताजी भी आश्चर्यचकित रह गई। उनको भी हृदय में आघात लगा, आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। कुछ देर में तत्त्व के आलंबन से शांत होकर सीता ने सारथी से कहा ह्न रामचन्द्रजी से कहना कि 'मुझे निर्दोष जानते हुये भी लोकापवाद के भय से वन में छोड़ दिया। इसमें तो उनका कुछ भी नहीं बिगड़ा; परन्तु लोकापवाद के भय से जीवन में कभी धर्म को मत छोड़ देना।'

यद्यपि सीता के पर्याय में रागादि हैं, वर्तमान में आर्त्त परिणाम भी हैं; तथापि वे इस बात को जानती हैं कि मैं तो स्वभाव से राग रहित हूँ। इसप्रकार पर्याय में राग और स्वभाव से रागरहित ह्न दोनों ही बातों का धर्मी समकिती पुरुष को ज्ञान है। इससे वह भ्रमित नहीं होता। वस्तु को जैसी है, वैसी ही जानता-मानता है। **(क्रमशः)**

सभी आत्मायें समान हैं, कोई छोटा-बड़ा नहीं; प्रत्येक आत्मा स्वभाव से तो भगवान है ही, यदि पुरुषार्थ करे तो पर्याय में भी भगवान बन सकता है, पर अन्तरोन्मुखी पुरुषार्थ करे तब। **– सत्य की खोज, पृष्ठ-177**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : पंचपरावर्तन में जीव भटकता है, वह व्यवहार से है अथवा निश्चय से?

उत्तर : पंचपरावर्तन में अपने भावों से ही भटकता है, अत: निश्चय से है; परन्तु त्रिकाली ध्रुव स्वभाव की अपेक्षा से पंचपरावर्तन के भाव पर्याय में होने से पर्याय को व्यवहार कहा जाता है। पंचपरावर्तन में जीव भटकता है, वह व्यवहार से भटकता है ह्न ऐसा नहीं है; किन्तु निश्चय से ही भटकता है। प्रवचनसार में जीव के विकारभाव को निश्चय कहा है।

प्रश्न : त्रिकाली निष्क्रिय चैतन्य ही परमार्थ जीव है। बंध और मोक्ष की पर्याय को करे वह तो व्यवहार जीव है। तो बताइये कि कितने प्रकार के जीव हैं ?

उत्तर : दो प्रकार के जीव हैं। एक परमार्थ जीव और दूसरा व्यवहार जीव। परमार्थ जीव तो त्रिकाल निष्क्रिय मोक्षस्वरूप ही है और पर्याय बंध-मोक्षरूप से परिणमन करती है वह व्यवहार जीव है।

प्रश्न : जिस घर में जाना न हो उसके जानने का क्या काम ? उसीप्रकार व्यवहार तो छोड़ने योग्य है, तब फिर उसके जानने का क्या काम है ?

उत्तर : जिस घर में न जाना हो, उसे भी जानना चाहिये। यह घर अपना नहीं है, अपितु दूसरे का है - इसप्रकार जानना आवश्यक है। उसीप्रकार पर्याय का आश्रय करने का जहाँ निषेध किया है, वहाँ उसका ज्ञान भी न करे तो एकान्त हो जायेगा, प्रमाणज्ञान नहीं होगा। पर्याय का आश्रय छोड़ने योग्य होने पर भी, जैसी वह है; वैसा ज्ञान तो करना ही पड़ेगा और तभी निश्चयनय का ज्ञान सच्चा होगा।

प्रश्न : जो व्यवहार, निश्चय को बतलाता है, उसका कुछ उपकार तो है न ?

उत्तर : नहीं ! व्यवहार निश्चय तक नहीं पहुँचाता, उससे कुछ कार्य सिद्धि नहीं होती। व्यवहार अनुसरण करने योग्य नहीं है। दर्शन, ज्ञान, चारित्र का भेद करके आत्मा समझना पड़ता है। इतना व्यवहार होता ही है, तब भी वह अनुसरण करने योग्य नहीं है। एक ज्ञायक को ही लक्ष्य में लेना योग्य है।

प्रश्न : व्यवहार प्रतिक्रमणादि कब सफल कहे जावें ?

उत्तर : हमारे वीतरागी सन्तों ने शास्त्रों में द्रव्यश्रुतात्मक व्यवहार प्रतिक्रमण कहे हैं ह्न उन्हें सुनकर, जानकर, सकल संयम की भावना करे, उसे व्यवहार प्रतिक्रमण का जानना सफल हैह्नसार्थक है। प्रतिक्रमणादि जितने प्रकार के व्यवहार शास्त्र में कहे हैं, वे सब व्यवहार बन्ध के कारण हैं; उन्हें छोड़कर अन्दर आनन्दस्वरूप में जाने पर ही व्यवहार का सफलपना कहा गया है। जितना भी क्रियाकाण्ड व्यवहार कहने में आता है, उसे छोड़कर शुद्धस्वरूप के अनुभव में निमग्न हो, तभी व्यवहार के जानपने की सफलता कही गई है। जो शुद्धस्वरूप के सन्मुख तो होता नहीं और मात्र व्यवहार में लीन रहकर आत्मा के आनन्दस्वरूप में नहीं जाता तो उसका व्यवहार केवल संसारभ्रमण का ही कारण है।

प्रश्न : व्यवहार से निश्चय होता है ह्न ऐसा यहाँ कहा कि नहीं ?

उत्तर : व्यवहार से निश्चय होता है, ऐसा नहीं कहा; किन्तु व्यवहार को जानकर, उसका लक्ष छोड़कर, निश्चय आनन्दस्वरूप आत्मा में जाये, वीतरागस्वरूप आत्मा में जाये, उसको व्यवहार जानने का सफलपना कहा है। जो वीतरागस्वरूप आत्मा में ढलता है, उसी के व्यवहार को निमित्तपना कहा है; किन्तु जो व्यवहार में ही खड़ा रहे और निश्चयस्वरूप में जावे नहीं; उसके व्यवहार का सफलपना नहीं होता और उसके व्यवहार को व्यवहार भी नहीं कहते।

प्रश्न : लगे हुये दोषों का प्रतिक्रमण आदि करने से आत्मा शुद्ध हो जाता है, तो फिर पहले से ही शुद्धात्मा के अवलम्बन का खेद करने से क्या लाभ ?

उत्तर : शुद्धात्मा के भान रहित जो प्रतिक्रमणादि हैं, वे दोष को घटाने-टालने में समर्थ नहीं है। कारण यह है कि जिसे आत्मा का अवलम्बन नहीं हुआ, उसे तो राग में एकताबुद्धि पड़ी है, उसके शुभराग के क्रियाकाण्ड मात्र दोषरूप ही हैं, दोष मिटाने में समर्थ नहीं हैं। अज्ञानी के प्रतिक्रमणादि तो पापरूप विषकुम्भ ही हैं और शुभरागरूप प्रतिक्रमणादि भी आत्मा का अवलम्बन नहीं होने से उसके लिये तो विषकुम्भ ही हैं। ज्ञानी के प्रतिक्रमणादि को आत्मा का अवलम्बन होने से व्यवहारनय से ही अमृतकुम्भ कहा है। ज्ञानी जब स्वरूप में स्थिर नहीं रक सकता, तब अशुभ से बचने के लिये शुभराग आता है। आचारशास्त्रों में जितनी भी शुभक्रियाकाण्ड की बात आती है, वह व्यवहारनय से ही अमृतकुम्भ कही गई हैं, निश्चयनय से तो वह विषकुम्भ ही है, बंधरूप ही है।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

शिकोहाबाद (उ.प्र.) : यहाँ जैन स्ट्रीट में निर्मित श्री नेमिनाथ दि.जिनमंदिर में जिनबिम्ब स्थापना हेतु श्री कुन्दकुन्द कहान मंगल ट्रस्ट, शिकोहाबाद द्वारा 26 नवम्बर से 2 दिसम्बर, 04 तक श्री नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया।

29 नवम्बर को जन्मकल्याणक पर बालक नेमिकुमार का 1008 कलशों से जन्माभिषेक किया गया। रात्रि में मैनपुरी का 45 फीट का पालना आकर्षण का केन्द्र रहा। 30 नवम्बर को तपकल्याणक के अवसर पर दीक्षा वन में विशाल जनसमुदाय के बीच डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली का वैराग्यमय मार्मिक उद्बोधन हुआ। साथ ही बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद एवं सहयोगी विद्वानों द्वारा नेमिकुमार के केशलोंच आदि की क्रियायें सम्पन्न कराई गई।

दिनांक 2 दिसम्बर को दोपहर में स्व. श्री सुरेन्द्रकुमार जैन के सुपुत्र श्री अनिलकुमार जैन, रतन घी, शिकोहाबाद द्वारा प्रदत्त अष्टधातु से निर्मित 51 ईंच की भगवान नेमिनाथ की पद्मासन प्रतिमा मुख्य वेदी पर विराजमान की गई।

इस अवसर पर ख्यातिप्राप्त डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनीवालों के प्रात: एवं रात्रि में समयसार पर प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. सुदीपजी जैन दिल्ली, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित प्रकाशदादाजी ज्योतिर्विद मैनपुरी, पण्डित अरविन्दजी करहल आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ भी मिला।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के निर्देशन में पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, ब्र. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन आदि ने सम्पन्न कराये।

इस प्रतिष्ठा महोत्सव में नेमिकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती ज्ञानमाला-श्री धनदेवजी जैन शिकोहाबाद को तथा सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी बनने का सौभाग्य श्रीमती भारतीबेन-श्री विपिनभाई भायाणी, अमेरिका को मिला। **– राकेश जैन**

रविवारीय गोष्ठियों का आयोजन

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा 28 नवम्बर, 04 को **पं. टोडरमलजी और उनका मोक्षमार्गप्रकाशक** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया; सभा की अध्यक्षता प्रतिष्ठाचार्य पण्डित विमलकुमारजी जैन जयपुर ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में शास्त्री वर्ग से प्रशांत उखलकर व रोहन रोटे तथा उपाध्याय वर्ग से तपिश जैन को पुरस्कृत किया गया। संचालन जितेन्द्र जैन खड़ैरी ने तथा संयोजन अमित जैन लुकवासा ने किया।

इसी शृंखला में 5 दिसम्बर, 04 को **मिथ्यात्व दु:ख का एक मात्र कारण** विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ। अध्यक्षता डॉ. दीपकजी जैन ने की। श्रेष्ठ वक्ता कु.अनुप्रेक्षा जैन एवं शीतल आलमान थे। सभा का संचालन सचिन्द्र जैन गढाकोटा ने किया। **ह्न विक्रान्त पाटनी**

अष्टान्हिका महापर्व सानन्द सम्पन्न

1. विदिशा (म.प्र.) : यहाँ श्री शीतलनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर किला अन्दर में अष्टाह्निका महापर्व के शुभ अवसर पर दिनांक 19 से 26 नवम्बर, 2004 तक श्री मूलचन्दजी अजितकुमारजी मोदी परिवार द्वारा सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रात: पूजन-विधान के मध्य जयपुर से पधारे युवा विद्वान पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला तथा रात्रि में आपके प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित जवाहरलालजी बड़कुल विदिशा एवं पण्डित विरागकुमारजी शास्त्री जबलपुर के भी प्रवचनों का लाभ उपस्थित साधर्मीजनों को प्राप्त हुआ।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित विरागजी शास्त्री, जबलपुर के सान्निध्य में पण्डित लालजीरामजी, डॉ. विनोदजी शास्त्री, डॉ. मुकेशजी शास्त्री, श्री शशांकजी जैन जबलपुर और श्री राजकुमारजी जैन (प्रिंस) ने सम्पन्न कराये। अन्तिम दिन जिनेन्द्र शोभायात्रा निकाली तथा दिल्ली से आये पंचकल्याणक रथ **कल्याणवर्धिनी** का भव्य स्वागत हुआ। **ह्न डॉ. राजेश शास्त्री**

2. सोलापुर (महा.) : यहाँ श्री भगवान आदिनाथ दि. जैन बुबणे मन्दिर, सोलापुर में श्री हर्षवर्धन सुभाषचन्द्र बुबणे द्वारा सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर दोनों समय विदुषी डॉ. विजयाताई गोसावी, मुम्बई के प्रवचनों का लाभ मिला। विधि-विधान के कार्य पण्डित प्रशान्तकुमारजी मोहरे शास्त्री, सोलापुर ने कराये।

3. अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री सीमंधर जिनालय प्रांगण में पर्व के अवसर पर रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि में पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन, बिजौलिया के प्रवचनसार एवं समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। अभिषेक एवं पूजन विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर द्वारा श्री श्रेणिक-मेघा लुहाड़िया एवं श्री पूनमचन्दजी लुहाड़िया के सहयोग से कराये गये। **– विजयकुमार जैन**

वैराग्य समाचार

1. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक एवं जैनपथप्रदर्शक के प्रबन्ध सम्पादक पण्डित जितेन्द्र वि. राठी की मातुश्री सौ.ऊषादेवी विट्ठलदासजी राठी का 6 दिसम्बर, 04 को शान्त परिणामों से पारशिवनी (नागपुर) में देहावसान हो गया। आप सरलस्वभावी एवं धार्मिक विचारों की महिला थीं। ज्ञातव्य है कि आपको अनेक वर्षों से ब्लड कैंसर था।

2. श्री बिरधीचन्दजी पहाड़िया, इन्दौर का 16 नवम्बर को समताभावपूर्वक स्वर्गवास हो गया। मुमुक्षु मण्डल से होनेवाले सभी कार्यक्रमों में आपका सक्रिय सहयोग रहता था।

3. गुवाहाटी निवासी श्री झूमरमलजी पाण्ड्या का दिनांक 23 नवम्बर को प्रात: स्वर्गवास हो गया है। आप सरलस्वभावी एवं स्वाध्यायी थे।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही मुक्ति को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है। **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

भ. महावीर निर्वाणोत्सव सानन्द सम्पन्न

1. देवलाली (नासिक-महा.) : यहाँ श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट द्वारा भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के शुभ अवसर पर दिनांक 9 नवम्बर से 13 नवम्बर, 2004 तक विधान एवं शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर के प्रात: एवं रात्रि में प्रवचनसार ग्रन्थ के 86 वीं गाथा पर मार्मिक प्रवचन हुये तथा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर आदि विद्वानों का भी समागम प्राप्त हुआ। विधान के सम्पूर्ण कार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद ने कराये।

2. जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 12 नवम्बर, 2004 को भगवान महावीरस्वामी निर्वाणोत्सव के शुभ अवसर पर त्रिमूर्ति जिनालय में प्रात: अभिषेक एवं पूजन के पश्चात् पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल का दीपावली पर विशेष व्याख्यान हुआ।

श्री दिग. जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर, घी वालों का रास्ता में दीपावली की पूर्व संध्या पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा का विशेष व्याख्यान हुआ। 20 बच्चों ने फटाके नहीं फोडने की प्रतिज्ञा ली; जिन्हें 13 नवम्बर को पुरस्कृत किया गया।

3. जबेरा (म.प्र.) : यहाँ श्री दि. जैन मंदिर में 'दीपावली पर्व क्यों ? एवं दीपावली पर्व की सार्थकता' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में श्री टोडरमल दि. जैन सि. महा. के 6 छात्रों एवं तीर्थधाम मंगलायतन के 3 छात्रों ने विचार व्यक्त किये। प्रात: एवं रात्रि में पण्डित विनोदजी जैन एवं पण्डित कमलकुमारजी जैन के प्रवचन का लाभ मिला।

4. शाहगढ़ (म.प्र.) : यहाँ श्री दि. जैन मंदिर में त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अन्तर्गत दि. 12 नवम्बर को पण्डित राजेशजी शास्त्री, शाहगढ़ का पर्व पर विशेष व्याख्यान हुआ। दि. 13 नवम्बर को 'भगवान महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया; जिसमें पण्डित राजेशजी शास्त्री, पण्डित माधवजी शास्त्री, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, पण्डित सुनीलजी शास्त्री, पण्डित सौरभजी शास्त्री तथा सचिनजी, अनुभवजी एवं सुधीरजी ने अपने विचार व्यक्त किये। दिनांक 14 नवम्बर को अक्षयनिधि कार्यक्रम हुआ।

पं. दिनेशभाई एवं डॉ. उज्ज्वला शाह द्वारा अमेरिका में धर्मप्रभावना

पण्डित दिनेशभाई शाह एवं डॉ. उज्ज्वला शाह, मुम्बई द्वारा दि. 18 सितम्बर से 29 नवम्बर, 2004 लगभग ढाई माह तक अमेरिका के डलास, डीट्रोइट, शिकागो, वाशिंग्टन, मियामी, सान फ्रांसिस्को आदि विभिन्न स्थानों पर जैन सिद्धान्त प्रवेशिका, करणानुयोग परिचय, कार्य-कारण रहस्य जैसे गंभीर विषयों का अत्यन्त सरलता से अध्यात्मरसगर्भित मार्मिक विवेचन किया गया; जिसके द्वारा अपूर्व धर्मप्रभावना हुई। **ह्न अतुल खारा, डलास**

ध्रुवधाम का शिलान्यास सम्पन्न

बांसवाड़ा (राज.) : यहाँ श्री ज्ञायक चेरीटेबल ट्रस्ट (रजि.) द्वारा संस्थापित रत्नत्रय तीर्थ '**ध्रुवधाम**' का भव्य शिलान्यास समारोह दिनांक 7 एवं 8 दिसम्बर, 04 को सम्पन्न हुआ।

शिलान्यास महोत्सव में सम्पूर्ण विधि-विधान सम्बन्धी सम्पूर्ण कार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित राकेशजी शास्त्री, पण्डित संदीपजी शास्त्री, पण्डित सुबोधजी शास्त्री, पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित सुनीलजी 'धवल'के सहयोग से सम्पन्न हुये।

इस अवसर पर पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, ब्र.यशपालजी जैन, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, डॉ. मानमलजी आदि अनेक विद्वान उपस्थित थे।

महोत्सव में श्री पंच बालयति दिग. जिनमंदिर, आ.कुन्दकुन्द स्वाध्याय भवन, आ. अमृतचन्द्र छात्रावास, राजा श्रेयांस भोजनालय, आ. समन्तभद्र चिकित्सालय, पं. टोडरमल विद्वत् निवास, पं. बनारसीदास सभा भवन, पं. दौलतराम विद्वत् निवास एवं ब्राह्मी-सुन्दरी सरस्वती निलय का शिलान्यास क्रमश: भबूतमलजी भण्डारी, अनन्तभाई ए. सेठ, धूलजी महीपालजी ज्ञायक, डॉ. बासन्तीबेन शाह, नरेशजी एस. जैन, देवीलाल कस्तूरचंदजी शाह, प्रेमचन्दजी बजाज, जीतमलजी परिवार एवं जबेरचन्दजी हथाया परिवार ने किया।

अकलंक शिक्षण संस्थान के छात्रों ने इस अवसर पर एक तत्त्व गोष्ठी का भी आयोजन किया। अध्यक्षता श्री जयन्तीलालजी दोशी ने एवं संचालन श्रीमती ममता जैन ने किया। छोटे-छोटे बालकों एवं दाहोद महिला मण्डल की सदस्यों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये।

इस अवसर पर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित **ध्रुवधारा** पत्रिका के प्रथम अंक का विमोचन भी किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री ने किया। **– वीरेन्द्र ज्ञायक**

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित –

39वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर, कोल्हापुर (महा.) में

प्रतिवर्ष ग्रीष्मावकाश में सम्पन्न होनेवाले शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों की शृंखला में 39 वाँ शिविर रविवार, दिनांक 8 मई, 05 से बुधवार, दिनांक 25 मई, 05 तक कोल्हापुर (महा.) में सर्वोदय स्वाध्याय समिति, कोल्हापुर द्वारा आयोजित होने जा रहा है।

इस शिविर में देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त आध्यात्मिक प्रवक्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल तथा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील आदि अनेक विद्वान उपस्थित रहेंगे। इनके अतिरिक्त डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी आदि अनेक विद्वानों से संपर्क किया जा रहा है।

नोट – हिन्दी भाषी प्रान्तों से पहुँचनेवाले मुमुक्षुओं के लिये भोजन आदि की समुचित व्यवस्था अलग रहेगी।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा - कार्यक्रम (सत्र-2004-2005)

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शुक्रवार 28 जनवरी 2005	1. बालबोध पाठमाला भाग1 (बालबोध प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग1 (प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (बरैयाजी) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
शनिवार 29 जनवरी 2005	1. बालबोध पाठमाला भाग 2 (बालबोध द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 (प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
रविवार 30 जनवरी 2005	1. बालबोध पाठमाला भाग 3 (बालबोध तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्धयुपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रात: 9 से शाम 5 बजे के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।